श्री गोविन्दबल्लभ पंत के 92वें जन्म दिवस पर प्रधानमंत्री श्री चरण सिंह का भाषण

दिनांक : 10/9/1979
स्थान : दिल्ली

माननीय सभापति जी और सज्जनो,

मुझको बहुत खुशी है, पंत जी की आत्मा को श्रद्धांजलि पेश करते हुए। उसका कारण यह है कि मैं बहुत दिनों तक उनके साथ रहा हूँ सन 37 से 54 तक लखनऊ में। और इतना निकट रहा हूँ उनके मैं कि शायद ही किसी और जनसेवक को इतना मौका मिला हो। मुझ पर उनकी कृपादृष्टि भी बहुत रही। दरअसल उनमें गुण इतने थे कि अगरचे मैं और मुख्यमंत्रियों के सम्पर्क में नहीं आया, तथापि मेरा ख्याल यह है कि शायद और किसी लीडर में इतने गुण रहे हों। इतने सदाशय, इतना एडमिनिस्ट्रेशन को या प्रशासन को समझने वाले, इतने गरीब की समस्याओं को जानने वाले बहुत कम लोग होते हैं। अपने साथियों के साथ जो उनका बर्ताव था, वह समझिये कि जैसे एक कुटुम्बजनों के साथ बर्ताव होता है।

एक बार की बात आपको बतलाना चाहता हूँ। माननीय पंडित जवाहरलाल जी ने उनको लिखा कि आप दिल्ली आ जाईये। जवाहरलाल जी हमशा चाहते रहे कि पंत जी दिल्ली आ जायें। ये दूसरी बार की बात है। पहली बार उन्होंने कोशिश की, वो नहीं आये। पंत जी आना भी नहीं चाहते थे। हम लोगों की ख्वाहिश थी कि वो न जायें और दूसरी बार जो जवाहरलाल जी ने उनको कहा तब भी नहीं आना चाहते थे वो, क्योंकि उनकी कोई बहुत बड़ी ख्वाहिश यह नहीं थी कि दिल्ली में आकर वो उपप्रधानमंत्री बनें या प्रधानमंत्री बनें। जहां पर थे लखनऊ में, वो दुनिया के सात देशों में यानि जनसंख्या की दृष्टि से आता था उत्तर प्रदेश। आज साढ़े दस करोड़ की संख्या है। तो वो उनका घर था, सारे लोगों को जानते थे, जितने पब्लिक वर्कर्स थे हम उस जमाने के, उस पीढ़ी के लोग। तो उनको ऐसा लगता था कि जैसे घर से उनको हटाया जा रहा है और हम लोग भी महसूस करते थे कि जैसे हमारे घर से बड़े को छीना जा रहा हो।

मैं जनरल सेक्रेटरी था उस वक्त पार्टी का, मिनिस्टर भी था, साथ ही जनरल सेक्रेटरी भी। तो मैंने जवाहरलाल जी को चिट्ठी लिखी पार्टी की ओर से कि इतना बड़ा प्रदेश है, उसकी समस्याएं बहुत गंभीर हैं, एडमिनिस्ट्रेशन सबसे बड़ा है और इसको जितना पंत जी समझते हैं इतना कोई समझता नहीं है। और भी मैंने कुछ इसमें तर्क दिये लेकिन एक तर्क मुझको याद पड़ता है, जो मैंने दिया था। वो यह है कि पंत जी केवल मुख्यमंत्री नहीं हैं, बल्कि एक ज्वाइंट फैमिली के मैनेजर हैं। सबको एक परिवार समझते हैं और हम सब लोग उस परिवार के सदस्य हैं। लेकिन पंडित जी उनका यहां आना बहुत जरूरी समझते थे। इसलिए उन्होंने आग्रह किया और पंत जी को वहां से आना पड़ा।

और मैं उनकी बात बतलाना चाहता हूँ आपको, एक–दो इसी प्रकार की। मैंने कई बार उनके सामने इस्तीफा दे दिया। मैं समझ रहा था, सोचता था कि मेरे साथ अन्याय हो रहा है या कुछ बातें मुझे न पसंद थीं। तो इस्तीफा कभी मंजूर नहीं किया उन्होंने एक बार जब मैं बहुत ही नाराज हो गया, गलती मेरी रही होगी, तो मुझे बुलाया उन्होंने और मुझसे बोले कि चरण सिंह तुम मेरी मदद नहीं करना चाहते हो, तो इतने बड़े सूबे को मैं अकेला कैसे चला

सकता हूँ? मैं पार्लियामेंट्री सेक्रेटरी था। वो पार्लियामेंट्री सेक्रेटरी से कह रहे हैं कि अगर तुम मेरी मदद नहीं कर सकते तो इतने बड़े सूबे को मैं अकेला कैसे चला सकता हूँ। उनका तरीका देखिये। उनका स्नेह देखिये। तो तुम जनरल सेक्रेटरी भी हो पार्टी के, मेरा इस्तीफा ले लो और पार्टी के सामने पेश करो। तो उन्होंने मुझे इस्तीफा दिया– मैं तुमको इस्तीफा देता हूँ, पार्टी में पेश करो और इसके बाद में दलील खत्म, नाराजगी खत्म। ये तरीका था उनका काम करने का। और यही आखिर तक रहा। हम सब लोग, यू0पी0 के, उनका अपने घर का बुजुर्ग समझते रहे।

जहां तक समस्याओं के ज्ञान की बात है तो भी, यानि पूरा ज्ञान था उनको राज्य समस्याओं का, देश की समस्याओं का। मैं पांच साल पार्लियामेंट्री सेक्रेटरी रहा हूँ– 46 से 51 तक। आज तो यह हाल है कि एम0एल0ए0 होने के बाद अगर उसको मिनिस्टर न बनाया जाये तो नाराज। वह दूसरी पार्टी में जाने की बात या जल्दी ही या चीफ मिनिस्टर को निकालने की तजवीजें वो करने लगता है। ट्रेनिंग नहीं हो रही है मिनिस्टर्स की। एकदम गांव मे ंरह रहा है। एम0एल0ए0 किन्हीं सरकम्स्टान्सेस से हुआ। अब फिर उसकी नजर एकदम चीप मिनिस्टरी या प्राइम मिनिस्टरी पर है। हमारे जमाने में ये बात नहीं थी। जैसे मैं अपनी मिसाल दे रहा हूँ। एक ट्रेनिंग हुई पूरी, पांच याल तक पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी रहा। उसके बाद हमारा नम्बर मिनिस्टरी का आया। लेकिन मुझ पर उनकी इतनी कृपा थी कि पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी रहते हुए भी जब मैंने उनसे कोई बात कही– चाहे किसी दूसरे मिनिस्टर से मेरा मतभेद रहा हो, उस बात को कहने में, गांव की आम जनता की बावत मैंने उन्हें कभी कोई सुझाव दिया, मुझे याद नहीं पड़ता कि कभी उन्होंने टर्न डाउन किया हो, उसको रिजेक्ट किया हो, नामंजूर किया हो। फौरन मंजूर। लेकिन उनकी कुछ मसूसियत थी, मुझे रखना चाहते थे। पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी बहुत जमाने तक उन्होंने मुझको रखा। सबसे बड़ा काम यू0पी0 में हुआ उनके जमाने में जमींदारी के खात्मे का, जमींदारी विनाश का, लैण्ड रिफाम्र्स, भूमि सुधार का वो ऐसे हुआ हैं कि मैं यह कह सकता हूँ, बिला खौफ तबदीर के, कि दुनिया में किसी डेमोक्रेसी में ऐसा नहीं हुआ। (तालियां) हुआ ही नहीं। हम लोगों ने उनकी लीडरशिप मानी। हर उस व्यक्ति को जिसका जमीन पर हल खड़ा हुआ हो, मैं गांव की भाषा इस्तेमाल कर रहा हूँ, किसी भी हैसियत से, किसी भी नवैपत से, उसको मालिक बना दिया। चाहे गैरदाखिलकार, काश्तकार, नॉन ओकुपेन्सी, चाहे शेयरक्रॉपर जिनको साझीदार कहते हैं, चाहे सबटेनेन्ट जिनको शिकमी कहते हैं, चाहे ट्रेसपासर्स जो दर्जे थे बिना तसवीया लगान या क्रासिम कहते हैं, उनको भी उन्होंने परमानेंट राइट्स, पूरे अधिकार दे दिये, जो दुनिया में कहीं नहीं दिये गये। दुनिया की बात छोड़ो हिन्दुस्तान में नहीं दिये गये।

यह लोगों का ख्याल है कि जमींदारी का खात्मा हो गया। हुआ एक माने में, लेकिन जमींदारी का खात्मा उत्तर प्रदेश के अलावा दूसरे सूबों में जिस प्रकार से हुआ, उससे गरीब को फायदा नहीं हुआ। उल्टा नुकसान हो गया। काश्तकारों को जिनको दखलकारी या ओकुपेन्सी के, जो हीनहयाती कहलाता है, उसे हिरेडिट्री राईट्स पहले से, अंग्रेजों के जमाने से हासिल थे, उनको केवल मालिक बना दिया गया। लेकिन जो और टेनेन्टस थे, नॉन ओकुपेन्सी, फिर मैं दोहराता हूँ, सबटेनेन्ट, शेयरक्रॉपर और फिर मैंने कहा कि दुनिया में कहीं नहीं हुआ। ट्रेसपासर्स तक को भी हमने अधिकार दिया, यह कहीं नहीं हुआ। राइट ऑफ रिजम्पशन ऑफ लैण्ड कि जमींदार को अधिकार हो कि तीस एकड़ से साठ एकड़ तक

जमीन बेदखल करा ले काश्तकार से, उससे जितना नुकसान हुआ, उसका अनुमान नहीं लगा सकते आप। शायद लाखों–करोड़ों किसान बेदखल हो गये हों। नतीजा यह हुआ कि ये अधिकार दूसरे सूबों में नहीं दिये गये। तो किसान बेदखल हुए, एग्रीकल्चरल लेबर्स को, खेतिहर मजदूरों की तादाद बढ़ी और किसानों की तादाद घटी।

मैं जानता हूँ कि आपको शायद ज्यादा दिलचस्पी नहीं होगी इस मामले में, लेकिन फिर भी दो बातें इस सिलसिले में और कहूंगा, ताकि आपके जेहन पर साफ हो जाये कि जो मैं बात कह रहा हूँ वो बिल्कुल सहीं है। सन 61 के सेन्सस के अनुसार जनगणना के अनुसार इक्यावन फीसदी आदमी किसान था हिन्दुस्तान में और 17 फीसदी खेतिहर मजदूर। इन दस साल के अन्दर बेदखलियां हुईं बहुत। सन् 71 में किसान की तादाद 51 से 43 हुई, मजदूर की तादाद 17 से बढ़कर 26 हई। आज रेशो यही है। तो वो जो आठ फीसदी बेदखल हुए वो सब किसान थे और सबको बेदखल करके उनको रिड्यूस कर दिया एग्रीकल्चरल लेबरर्स में। सारे सूबों में यही हुआ। ये जो नक्सलाईट या कम्युनिस्टों का जोर जिन सूबों में दिखाई देता है, आप समझ लो, वहां जमींदारी का खात्मा इमानदारी के साथ नहीं हुआ है, वरना यह सूरत देश की आज न होती। मैं रेवेन्यू मिनस्टर था पंत जी का। मैंने जो तजवीज इस सिलसिले में रखी, मेरे साथियों ने बहुत–बहुत मुखालफत की। मैंने कहा यह था कि ये लोग बेदखल होकर कहां जायेंगे? पंत जी ने इस बात को माना।

एक दफा उनके सीनियर कालीग का बहुत जोर पड़ा। तो मेरी एक तजवीज को, जो मैं कह रहा था कि 'सो कॉल्ड ट्रेसपासर्स। ट्रेसपासर्स नहीं हैं, जेनुइन टेनेन्ट्स हैं। लैण्ड लॉर्ड और पटवारी का कालेजिन होकर ट्रेसपासर्स लिख दिया गया और सब–टेनेन्ट्स को राइट देना परमानेंट। वो इससे एग्री कर गये। मैंने एक बात कही उन्होंने सर्वे करा लिया, जो मैंने कहा वो ही बात निकली।

लेकिन मेरे तीन साथी, जिनका नाम नहीं लेना चाहता, तीनों आज इस संसार में नहीं हैं, बड़ा विरोध कर रहे थे। आखिर मुझको इस्तीफा देने की नौबत आई। उन्हाने कहा कि नहीं। अधिकार दिये जायेंगे और दिये। लिहाजा एक फॉरेन कमेन्टेटर था, जिसकी डेथ हो गयी है, मिस्टर वुल्फ लैडजिंस्की, उसने आकर यहां लैण्ड रिफार्म्स की स्टडी की। उसने लिखा कि सिवाय यू0पी0 के हिन्दुस्तान में कहीं जमींदारी एबॉलीशन नहीं हुई। वो पंत जी का सबसे बड़ा काम, फिजीकल काम, एक तरीके से स्थूल काम करने वाला मैं लेकिन इंस्पीरेशन, प्रेरणा उनकी। हो ही नहीं सकता था बिना उनके। इससे मालूम होगा कि गांव की स्थिति को, जहां भारत असली रहता आया है, वो कितना समझते थे और कितना उनसे हमदर्दी रखते थे।

मुझे दो बातें उनकी अब तक याद हैं। आमतौर पर लेट हो जाते थे पहुंचने की जगह। अगर मान लीजिए यहां साढ़े पांच बजे आना है, तब यकीन कीजिए कितनी कोशिश करते, वो छह बजे से पहले न आते। तो थी एक पहले से। मैंने सुना जब वकालत करते थे तब घर से चलते तो पाजामा सड़क पर बंधता था। यह मैंने सुना था। तो इस मामले में थे वो। मैंने सुना है कि जो लोग जुपेटेरियन होते हैं, जिन पर जुपीटर का ज्यादा असर होता है, वो हमेशा लेट–लतीफ होते हैं।

एक बार की बात है, मैं उस जमाने में पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी था। नैनीताल जाया करते थे हम लोग उनके जमाने में। गवर्नमेंट गई हुई थी। तो अपने जिले में उन्होंने दो जलसे रखे हुए थे। उनको जाना था। उन्होंने मुझसे कहा, ''चलो मेरे साथ।'' मैंने कहा चलिये। अब जो

मीटिंग पहले होने वाली थी, उसका समय बीत रहा था। तो मैंने कहा, ''कौन सी मीटिंग में आप पहले चलेंगे?'' उन्होंने कहा कि पहले उसे ही निपटा लें, दूसरी को। क्योंकि इसको तो देर हो ही गई है। तो फिर हम उसमें पहुंचे। इसके बाद जो दूसरी मीटिंग में आये वो, तब तक लोग चले गये थे। था हमेशा उनका यह तरीका। तो एक बात मुझको याद है कि कोई उसे बुरा नहीं मानता था। सहृदयता थी। हॉ, दूसरी बात जो मैं कहना चाहता था वो ये कि हम अंदाज तो लगा सकते थे कि पंत जी सोच क्या रहे हैं लेकिन वो हमसे बात अपने मन की कभी नहीं बताते थे। लोग कहते थे कि 'पंत जी इस दि ओनली मैन, हू हेचिज्ड कान्सप्रेसी ऑन बाई हिमसेल्फ हैण्डपिरे (एक लीडर हैं हिन्दुस्तान में, जो षडयंत्र करते हैं लेकिन अकेले, दूसरे के साथ मिलकर नहीं)। तो इतने गम्भीर। अपने मन में बात रखते थे और मेरे जैसे तो बहुत आदमी। मैं सब से ज्यादा आदर मैं.... मेरे मन में कोई बात रहती नहीं है, कुरैशी साहब से कह दूंगा, नहीं कहूंगा तो कृष्णचंद जी से कह दूंगा (पंत जी के सुपुत्र) लेकिन वो गम्भीर आदमी थे कभी सल्तनत की बात जिसे रम्ज–ए–सल्तनत कहते हैं, पॉलिटिक्स की बात कभी उनके पेट से निकलती नहीं थी, उनकी जबान से कहीं नहीं, बड़ी भारी बात है। पॉलिटिशियन के लिए गहुत जरूरी है कि अपनी जबान पर लगाम रखे (हंसी)। लेकिन मेरे दास्तो, मानोगे, आजकल मैं बहुत लगाम रख रहा हूॅ पर दूसरे लोगों की लगाम उतर गयी है बिल्कुल (हंसी)। रोज गालियां मैं खाता हूॅ। आज ही मुझे मिली है अखबार में कि साहब सब–इंस्पेक्टर बदल दिये हैं एक बराबरी में, बिल्कुल गलत, झूठी बात। झूठी बात कहता हूॅ मैं जो जानबूझ कर गलतबयानी होती है, वो झूठ होती है। कह रहे हैं लीाग और मैं आज भी पॉलिटिक्स की बात नहीं कहना चाहता लेकिन जरूरी है कि जिन लोगों के ऊपर जिम्मेदारी ह वे बहुत तौलकर बातें करें। लेकिन हमारे यहां तौलकर बातें नहीं हो रही हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय ने एक बात कही कि जहां जरा एक खराबी हुई हमारे राजनीतिक क्षेत्र में तो हम लोग संविधान बदलने की बातें करते हैं वो बात ठीक कहते हैं। लेकिन साथ ही यह भी है कि जो संविधान हमने लिया है अंग्रेजों से, वो केवल अंग्रेज ही अच्छी तरह चला पाया। और किसी तरीके का, कहीं किसी देश में उस तरह की कामयाबी नहीं हुई या अंग्रेज या जो अंग्रेज कौम जहां जाकर बस गयी, ताकि पार्लियामेंटरी सिस्टम फेल हो गया। लेकिन जो कुछ देश में हो रहा है, जिस तरह हम लोग चला रहे हैं, मैं भी उसमें शामिल हूॅ, अगर कोई गलतियां हुई हैं तो उस पर अगर हमारे विद्वज्जन, हमारे विचारशील व्यक्ति अगर उस पर विचार करें, तो कोई अचरज की बात नहीं। विचार होना चाहिए। मननीय पंत जी मेरे मानसिक क्षितीज में बहुत बड़ा स्थान घेरे हुए हैं, मेरे मेन्टल होराइजन में। क्योंकि मैं समझता हूॅ कि मेरे जीवन का सबसे बड़ा हिस्सा वहां गुजरा है पंत जी के साथ, उनके नीचे काम करने में।और मैं उसको अपनी लाईफ का गोल्डन पीरियड मानता हूॅ, बेहतरीन। उनके चले जाने के बाद हमारे यू0पी0 में झगड़े शुरू हो गये। एक बार मैंने यह कहा कि अगर पंत जी वापिस आ जायें तो मैं उनके नीचे पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी रहकर काम करना पसंद करूॅगा, बनिस्पत मौजूदा हालत में कैबिनेट मिनिस्टर रहने के (तालियां)। मैंने लिखकर दे दिया एक दफा, शायद पंडित जवाहर लाल जी का कि जिस ढंग से काम लेते, जो विश्वास, जो उनका स्नेह, उनकी जानकारी, जिस ढंग से काम करते थे, उसमें लुत्फ आता था, आनन्द आता था।

एक जरा जाती बात हो जाती है लेकिन जरूरी भी है कहनी। साढ़े आठ बजे से पहले पंत जी कभी दफ्तर से नहीं उठते थे। मेरे मेरा ऑफिस उन्हीं के बराबर में था। मैं सवा नौ से पहले कभी उठना नहीं चाहता था। तो पंत जी कभी–कभी डंडा लिये मेरा दरवाजा खटखटाते, ''चलो देर हो गयी है बहुत''। अब वो यहां चले आये तो फिर मैंने कभी सवा नौ बजे रात तक काम नहीं किया। बात ही खत्म हो गई। पंत जी जैसे आदमी दिग्गज उस जमाने में पैदा हुए। वो ही नहीं, अनेक पैदा हुए और पॉलिटिक्स में ही नहीं, जीवन के हर क्षेत्र में हुए– साईंस, कल्चर। साईंस में चाहे केमिस्ट्री, चाहे फिजिक्स, लिटरेचर में वैसा कहिये लिट्रेचर प्रोपर, हिस्ट्री, लॉ, जर्नलिज्म और नाम गिना सकता हूँ आपको। अब बौना का मुल्क हो गया है। अब वो बात ही नहीं रही।

कभी–कभी लोग कहते हैं, खैर अब फैमिन, अकाल नहीं है, अन्न की कमी नहीं है। तो मैं कहता हूँ कि अन्न की कमी हो या न हो लेकिन अब आदमियों की कमी है, जिसको आदमी.....। यूं 65 करोड हैं, लेकिन वो जो जेनेरेशन थी पंडित जी वाली, पंत जी वाली, अब उस जेनेरेशन के जो आदमी थे, वो अब नहीं पैदा होते हैं। क्या कारण रहे हैं इसको मैं समझ नहीं पाया हूँ। न वैसे लॉयर्स हैं, न वैसे जर्नलिस्ट्स हैं, न वो हिस्टोरियंस हैं, न वो पॉलिटिशियन्स हैं, न वो सेक्रीफाइस करने वाले लोग हैं, न वो उस तरह से खामोश सेवा करने वाले लोग हैं। हर क्षेत्र में ड्वार्फस। मैं उसका एक कारण ये समझता हूँ कि जब किसी जानवर पर, जीव पर आक्रमण होता है, किसी ऑरगेनिज्म पर, लिविंग ऑरगेनिज्म पर आक्रमण होता है बाहर से, तब 'इट पुट्स इन इट्स बैस्ट' तब वो पूरी कोशिश करता है उस आक्रमण को वार्ड ऑफ करने की, हटाने की और जिन्दा रहने की, यदि फंस गया तो आजाद होने की। नेशन भी एक लिविंग ऑरगेनिज्म है। एक जिन्दा चीज है। गुलाम था देश, तो गुलामी से निपटने के लिए जैसे कौम का जीवट फट निकला हो, उसमें से, जो बेस्ट था उसका वो बाहर आ गया हमारी कौम का। अब भोगने का जमाना आ गया। अब स्ट्रगल कर रहे हैं, ऐसा हम समझते हैं। स्ट्रगल्स में बेस्ट आदमी पैदा होते हैं हमेशा और हमने समझा कि भोग का जमाना है, मुल्क मालदार हो गया और ओवरटाईम एलाउंस मिलना चाहिए हरेक को। बोनस हरेक को मिलना चाहिए वगैरह, वगैरह।

मैंने छोटा सा इशारा किया। अब भोग का जमाना है, स्ट्रगल्स का नहीं। इसलिए बौने आदमी पैदा हो गये। अब वो आदमी ही नहीं रहे। अब पंत जी, जवाहरलाल जी, सरदार पटेल का मैं क्या जिक्र करूँ और क्या महात्मा जी का, य सब लोग और उस वातावरण को भी मैं और जो मेरे साथी, जैसे मेरी उम्र क्या है, आप कहें देश में और कुछ लोग बैठे हों, वे कल्पना कर सकते हैं। मेरे से दूसरी पीढ़ी के लोग उस जमाने की कल्पना नहीं कर सकते। मैंने तो कभी–कभी यह कहा कि जो आज का स्टैंडर्ड हो गया हमारी पब्लिक लाईफ का, पता नहीं मुझसे कहना चाहिए था कि नहीं कहना चाहिए था, लेकिन मजबूर हो गया कई बार सार्वजनिक सभाओं में कहने के लिए कि आज के जमाने से, शायद अंग्रेजों की गुलामी के जमाने को पसंद करता, बशर्ते महात्मा गांधी जी की लीडरशिप आ जाती, कि अरमान तो बने रहते। अब लेकिन देश आजाद तो हुआ, अरमान सब खत्म हो गये (तालियां) और जब अरमान खत्म हो जाते हैं तो देश कभी तरक्की नहीं करता। कभी उस देश की कौम तरक्की नहीं करती।

मैं एक ही बात कहकर बात खत्म करना चाहता हूँ और वह यह कि मेरी परमात्मा से प्रार्थना है कि पंडित गोविन्द बल्लभ पंत जैसे व्यक्ति फिर इस देश में पैदा हों (तालियां)।

————0————